IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान शिक्षा पद्धति में उपादेयता का विश्लेषण

डॉ. राजेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,शिक्षाशास्त्र

श्री बजरंग स्नातकोत्तर महाविद्यालय,दादर आश्रम,सिकंदरपुर,बलिया,यू. पी.

शोध सार

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से समृद्ध किसी देश की संस्कृति नहीं है। इतना गहन दार्शनिक चिंतन की शुरुआत भारत में हुई थी।आज भी भारत की पुरातन सभ्यता एवं संस्कृति की कोई तुलना नहीं है।प्राचीनतम ग्रंथ वेद हो या प्राचीनतम दर्शन सांख्य सभी में भारतीय ज्ञान परंपरा की झलक मिलती है। वेद, वेदांग,उपनिषद, षठ दर्शन आदि प्राचीन ग्रंथो में व्यक्ति के आचरण एवं चरित्र की शुद्धता पर बल दिया गया है एवं उच्च आदर्शों की अपेक्षा की गई है।इहलोक एवं परलोक दोनों की कल्पना की गई है। तथा व्यक्ति के लिए उच्च आदर्श एवं लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। वर्तमान समाज में फैली वैमनुष्यता, छल कपट,अराजकता आदि को देखते हुए हमें पुनः उन्ही आदर्शों की याद आती है।भौतिक संपन्नता के युग में सभी आधिकारिक धन के पीछे भाग रहे हैं। इस अंधी दौड़ में नैतिकता एवं उच्च आदर्श कहां पीछे छूट गए, यह पता ही नहीं चला।तथा आज भौतिक समृद्धि के साथ अच्छे आचरण से युक्त मानव की आवश्यकता को देखते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के उच्च आदर्शों को वर्तमान शिक्षा पद्धति में लागू करने की आवश्यकता है।

परिचय

"सः विद्या या विमुक्तये" में शिक्षा को अंतिम लक्ष्य, मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है।अतः प्राचीन भारत में भी तत्कालीन मनीषियों ने शिक्षा के महत्व को समझा और जीवन में सफलता का मूल मंत्र माना।प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के कारण ही भारत को विश्व गुरु की संध्या दी जाती थी।जहां विश्व के अधिकांश देशों की सभ्यता पशुवत थी।वहीं भारत में वेद, वेदांग़,उपनिषद् आदि ज्ञान एवं शिक्षा के ग्रन्थों की रचना हो चुकी थी। उसी पर आधारित शिक्षा व्यवस्था का सूत्रपात में भारत का अग्रणी था।एक प्राचीन ग्रंथ में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है,जो उसे सृष्टि के मूल को जानने में मदद करता है। "बुद्धियस्य बलम् तस्य"विद्या ददाति विनयम, जैसे सूत्र वाक्यों से शिक्षा का महत्व दृष्टव्य है। जो प्राचीन भारतीय सभ्यता को अन्य सभ्यताओं से विशिष्ट बनाती है।महाभारत में शिक्षा के विषय में

लिखा गया है,कि "नास्ति विद्या समं चक्षुनास्ति सत्यसमं तपं" अर्थात विद्या के समान नेत्र तथा सत्य के समान कोई दूसरा तप नहीं है।विद्या को सभी धनों से श्रेष्ठ बताया गया है।जिसे न कोई चुरा सकता है, और न ही कोई बांट सकता है।बांटने पर यह और बढ़ता है।विद्या विहीन नर न को पशु की संज्ञा दी गई है।

विश्लेषण

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण करना था। भारतीय शास्त्रों में सद्चरित्रता को व्यक्ति का आभूषण माना गया है।चरित्र और आचरण की शुद्धता पर अधिक बल दिया गया है।मनुस्मृति में कहा गया है,कि यदि व्यक्ति सभी वेद शास्त्रों का ज्ञाता है,परंतु उसका आचरण एवं चरित्र सही नहीं है,तो उसकी विद्वता का कोई महत्व नहीं है।शिक्षा व्यक्ति में अच्छे आचरण का विकास करती है,तथा सद्गुणों की प्राप्ति में सहयोग करती है। जो अच्छे आचरण एवं चरित्र का विकास करती है।शिक्षा से व्यक्ति को सद् मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है,जो उसके चरित्र गठन का मार्ग प्रशस्त करती है।विद्यार्थियों के समक्ष महापुरुषों के प्रेरणादायक आदर्श प्रस्तुत किए जाते थे,तथा उन्हें उनके अनुकरण की प्रेरणा प्राप्त होती थी।शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त विद्यार्थी एक चरित्रवान नागरिक के रूप में अपने आगामी कर्तव्यों का निर्वहन करता था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में छात्र के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था।गुरुकुल की दिनचर्या की शुरुआत व्यायाम से होती थी। तत्पश्चात् विद्या अध्ययन सामाजिक क्रियाकलाप आदि छात्रों के व्यक्तित्व की सर्वांगीण विकास में योगदान देते थे।शिक्षा के द्वारा छात्रों में तर्क,चिंतन,संयम,बुद्धि,विवेक आदि गुणों का विकास होता था। आत्मसंयम एवं आत्म अनुशासन जैसी शक्तियां छात्र के व्यक्तित्व को एक विलक्षण रूप देती थी।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं थी। अपितु उन्हें भविष्य के कर्तव्यों के निर्वहन के लिए तैयार किया जाता था।माता-पिता,गुरु एवं अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार एवं कर्तव्य तथा विभिन्न ऋणों यथा देव ऋण, पितृ ऋण आदि से मुक्त होने के उपायों पर भी छात्रों को जागरूक किया जाता था।उन्हें सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। वर्णक्रम के अनुसार व्यावसायिक रूप से कुशल बनाया जाता था।जिससे गृहस्थ आश्रम में अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन के योग्य हो पाते थे।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति प्राय: मौखिक थी।इसी कारण उसके संरक्षण की महती आवश्यकता को देखते हुए छात्रों का उसे संरक्षित करने तथा उसके प्रसार का उत्तरदायित्व था।प्राचीन भारतीय शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक था।मोक्ष प्राप्ति शिक्षा का अंतिम उद्देश्य था,परंतु सांसारिक विषयों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया था। व्यवसायिक उन्नति हेतु विभिन्न कलाओं एवं शिल्प शिक्षा का विधान था।प्राचीन शिक्षा पद्धति की एक मुख्य विशेषता गुरुकुल पद्धति थी। छात्र गुरुग्रहवास में शिक्षा प्राप्त करता था,और निरंतर गुरु के सानिध्य में रहता था।निष्कर्ष रूप से प्राचीन ज्ञान परंपरा का उदय वेदों से हुआ था।वैदिक साहित्य में अध्यात्म पर जोर था,परंतु सांसारिक ज्ञान एवं कौशलों को भी पर्याप्त महत्व प्राप्त था।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में उपादेयता का विश्लेषण

भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर्याप्त महत्व दिया गया है,और उसकी विभिन्न विशेषताओं को आधुनिक शिक्षा में उतारने की बात की गई है।आज समाज विघटन की ओर बढ़ रहा है।चरित्र एवं आचरण का ह्रास हो रहा है।व्यक्ति का झुकाव अर्थ की ओर है। वह येन केन प्रकारेण सुखी एवं संपन्न बनना चाहता है। जिससे समाज में अराजकता की स्थिति उत्पन्न होती है।प्राचीन ज्ञान परंपरा में अच्छे आचरण एवं चरित्र की बात की गई है।वर्तमान समाज

में उसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है।आज आवश्यकता इस बात की है,कि छात्रों में प्रारंभ से ही अच्छे आचरण एवं चारित्रिक गुणों के विकास पर बल दिया जाए।इसलिए आज नैतिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है।वर्तमान शिक्षा पद्धति में छात्र संकुचित मानसिकता से ग्रसित है।उसका एकमात्र उद्देश्य शिक्षा प्राप्ति के उपरांत उचित व्यवसाय का वरण कर आधिकाधिक साधन संपन्न बनना है। इससे शिक्षा की मूल धारणा सर्वांगीण विकास पर कुठाराघात होता है।प्राचीन शिक्षा पद्धति में बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था।जिससे शिक्षा प्राप्ति के उपरांत छात्र शारीरिक, मानसिक,संवेगात्मक,सामाजिक,नैतिक आदि सभी क्षमताओं से युक्त कुशल नागरिक बन सके,जो न केवल अपना विकास करे, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के विकास में भी योगदान दे सके।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है, कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के बल पर भारत विश्व गुरु कहलाता था।यदि हमें उसी खोई हुई गरिमा को पुनः प्राप्त करना है तो तो प्राचीन शिक्षा पद्धति की बेहतरीन व्यवस्थाओं को आज की शिक्षा पद्धति में अपनाना होगा।जिसमें चरित्र निर्माण, अच्छे आचरण का विकास,बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास,अपनी संस्कृति से लगाव एवं प्रेम तथा उसका संरक्षण करना, अच्छे नागरिक गुणों का विकास करना,अपने कर्तव्यों के निर्वहन की क्षमता का विकास करना,आध्यात्मिकता के साथ वैज्ञानिक सोच का विकास करना आदि अनेक ऐसी विशेषताएं हैं, जिन्हें आधुनिक शिक्षा पद्धति में लागू किया जाना चाहिए।जिससे भारत अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ

1 शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

2 भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं गुप्ता एस.पी. एवं डॉ.अलका गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2015

3 उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, पांडे, डॉ. रामशकल,अग्रवाल पब्लिकेशंस,आगरा, 2012।

4 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, लाल, रमन बिहारी, रस्तोगी पब्लिकेशंस मेरठ, 2018।

5 www.hindilibraryindia.com

6 www.google.com

7 www.shodhganga.com

8 www.wikipedia.com